TECHNOLOGY (SHRI BHUVNESH CHATURVEDI): (a) The CSIR grant as percentage of National Budget for these years had been follows:

1) 1991-92 — 0.22%
2) 1992-93 — 0.21%
3) 1993-94 — 0.22%
4) 1994-95 — 0.22%

(b) The monitoring and evaluation of R&D programmes is done by

(i) Research Councils (RCs) of each Laboratory

(ii) The five Technical Advisory Boards (TABs) for multidisciplinary, inter-laboratory, inter-agency programmes; and

(iii) The CSER Headquarters

The monitoring of individual programmes of a laboratory is carried out by the Research Council of the concerned laboratory which normally meets 3—4 times in a year. The Research Council consists of experts in different area of activities of the laboratory, representatives of related Government agencies/Departments and Industries. The Research Council provides guidance and advice on the selection of R & D projects, their objectives and periodically review their progress.

There are five Technical Advisory Boards (TAB) for different disciplines/ are as (Chemical, Biological Physical, Materials, Engineering Sciences), which identify inter-lab and inter-agency programmes and monitor their progress regularly.

At the Headquarters, some of the high priority special programmes and Mission made programmes are reviewed periodically by DG, CSIR.

The review of each laboratory is carried out by the DG, CSIR through Peer Review meetings.

Scientific and Technical Persons Registered with Employment Exchanges

4857. DR. MURLI MANOHAR JOSHI:
SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI:
SHRI JANARDAN YADAV:

Will the PRIME MINISTER be pleased to refer to answer to Unstarred Question 2716 given in the Rajya Sabha on 22nd December, 1994 and state·

(a) the number of unemployed scientific and technical persons registered with the employment exchanges in 1993 and upto December 1994;

(b) what is the estimate of unemployed scientific and technical persons not registered in the employment exchanges; and

(c) what is the likely number of such unemployed persons at the end of Eighth Five Year Plan?

THE MINISTER OF STATE IN PRIME MINISTER'S OFFICE & MINISTER OF STATE IN DEPARTMENTS OF ATOMIC ENERGY AND SPACE AND MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF SCIENCE AND TECHNOLOGY (SHRI BHUVNESH CHATURVEDI):

(a) As on 31-12-1992, 993771 scientific and technical persons were on the live register of employment exchanges, all of whom are not necessarily unemployed. The information beyond 31-12-1992 is not yet available with Directorate General of Employment and Training, Ministry of Labour;

(b) and (c) Based on a study conduced by Directorate General of Employment and Training, it is estimated that, in the beginning of 1995, there were 2.05 lakhs S&T personnel unemployed, comprising post graduates in science and technical & professional graduates. The likely number of such persons in the beginning of 1997

(which is the closing year of Eighth Five Year Plan) is estimated at 2.24 lakhs.

वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद का प्रकाशन और सूचना निदेशालय

4858. **श्री संघ प्रिय गौतम:** क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) विज्ञान और प्रौद्योगिक मंत्रालय के अंतर्गत वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद के प्रकाशन और सूचना निदेशालय में तकनीकी सहायक के कुल कितने स्वीकृत पद हैं;

(ख) देश में इस समय उक्त कार्यालय की कितनी शाखाएं हैं और उनमें भरे हुए और रिक्त पदों की संख्या कितनी-कितनी है; और

(ग) वर्ष 1992 से लेकर अब तक कितने पद रिक्त पड़े हुए हैं; कितनी बार साक्षात्कार लिया गया और की गयी नियुक्तियों तथा उम्मीदवारों के संबंध में ब्यौरा क्या है?

प्रधान मंत्री के कार्यालय में राज्य मंत्री तथा परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष विभाग में राज्य मंत्री और विज्ञान व प्रौद्योगिक मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री भुवनेश चतुर्वेदी): (क) प्रकाशन एवं सूचना निदेशालय में तकनीकी सहायकों के स्वीकृत पदों की कुल सं॰ 93 है।

(ख) प्रकाशन एवं सूचना निदेशालय, (पीआइडी) की कोई शाखा नहीं है।

(ग) पीआइडी में वर्ष 1992 से रिक्त पड़े तकनीकी सहायकों के पदों की संख्या निम्न प्रकार से है:

1.1.1992	6
1.1.1993	7
1.1.1994	9
1.1.1995	13
1.4.1995	13

वर्ष 1992 में पांच बार साक्षात्कार लिए गए जिसके परिणामस्वरूप इन पदों के लिए 4 अभ्यर्थियों का चयन किया गया। चूंकि अब भर्ती पर प्रतिबन्ध लगा हुआ है, अतः वर्तमान में रिक्त पदों पर कोई नियुक्ति नहीं की जा रही है।

तापमान में वृद्धि के प्रतिकूल प्रभाव

4859. **श्री राघवजी:** क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार का ध्यान दिल्ली से प्रकाशित हिन्दी "जनसत्ता" के दिनांक 10 अप्रैल, 1995 के समाचार पत्र में तथा अंग्रेजी दैनिक "टाइम्स ऑफ इंडिया" समाचार पत्र में वर्ष 1995 में तापमान में होने वाली भारी वृद्धि के समाचार की ओर दिलाया गया है;

(ख) यदि हां, तो इस समाचार के संबंध में अधिकृत जानकारी क्या है;

(ग) क्या सरकार तापमान में वृद्धि से होने वाले दुष्प्रभावों का सामना करने के लिये कोई योजना बना रही है, यदि हां, तो इसका ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण है; और

(घ) क्या इस तथ्य का आकलन किया गया है कि सर्वाधिक तापमान वाले क्षेत्र कौन-कौन से होंगे, यदि हां, तो आकलन का निष्कर्ष क्या है और यदि नहीं, तो क्या उपरोक्त खतरे को देखते हुए कोई आकलन किया जायेगा?

प्रधान मंत्री कार्यालय में राज्य मंत्री तथा परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष विभागों में राज्य मंत्री तथा विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री भुवनेश चतुर्वेदी): (क) जी, हां।

(ख) उच्च तापमानों तथा मौसम के किन दिनों में घटित होंगे इसका समय तथा स्थान विशेष के अनुसार विश्वसनीय दीर्घावधि पूर्वानुमान लगाने वाली कोई प्रमाणिक वैज्ञानिक तकनीक नहीं है। गरमी के महीनों में कुछ जगहों पर थोड़े समय के लिए सामान्य उच्चतम तापमान से अधिक तापमान का होना सामान्य मौसम चक्र का एक हिस्सा है। फिलहाल ऐसा कोई संकेत नहीं है कि तापमान सामान्य मौसमी उतार-चढ़ावों से अधिक जा सकते हैं।

(ग) उपर्युक्त (ख) को देखते हुए यह प्रश्न नहीं उठता।

(घ) जी, हां। भारत में लूओं के जलवायु विज्ञान पर अध्ययन किए गए हैं। आमतौर पर गरमी के महीनों में इण्डो-गंगा मैदानों के अतिरिक्त देश के उत्तर-पश्चिमी तथा केन्द्री भागों में मौसमी चक्र के एक अंग के रूप में लुएं चलती हैं। तटीय बेल्ट को छोड़कर अंदरूनी प्रायद्वीप में भी लू महसूस की जाती है।